इकाई 4 बृहत्संहिता के अनुसार दकार्गल विचार

इकाई की रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 दकार्गल विचार एवं सामान्य परिचय

4.4 दकार्गल विचारार्थ अनूप जाङ्गलादि भेद

4.5 जलशोधन विधि

4.6 शिला विदारण विधि

4.7 सारांश

4.8 अभ्यास प्रश्न

4.9 शब्दावली

4.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.11 गन्थसूची

4.12 प्रश्न

4.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- बता सकेंगे की दकार्गल किसे कहते है।
- समझा सकेंगे की कौन से वृक्ष के कितने नीचे शिरा (नाड़ी) प्राप्त होगी।
- बता सकेंगे की कूप और वापी को सुरक्षित और साफ कैसे रख सकते है।
- शिला विदारण के बारे में भी समझा सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई वास्तुशास्त्र के स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रासाद, ग्राम एवं नगर वास्तु नामक चतुर्थ पाठ्यक्रम के खण्ड तीन की चौथी इकाई है। जिसका शीर्षक बृहत्संहिता के अनुसार दकार्गल विचार है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने जलाशय, गृह तथा देवालय प्रतिष्ठा के बारे में अध्ययन कर लिया है तथा अब आप वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत दकार्गल विचार के बारे में अध्ययन करने जा रहे हैं। "दकार्गल" शब्द का अर्थ है जल की उपलब्धि या जल का ज्ञान। जैसा कि बृहत्संहिता में आचार्य स्वयं कहते है **दकार्गलं येन जलोपलब्धिः**। जिस प्रकार मनुष्य के अङ्ग में नाड़ियाँ होती हैं उसी प्रकार उँची-नीची शिराएँ होती हैं। आकाश से तो एक स्वाद वाला जल भूमि पर गिरता है परन्तु वही जल पृथ्वी की विशेषता के कारण तत्तत् स्थानो में अनेक प्रकार से रस स्वाद देने वाला हो जाता है। इसलिए हमें भूमि के रस, वर्ण का परीक्षण करके जल के रस और स्वाद का परीक्षण करना चाहिए।

4.3 दकार्गल विचार एवं सामान्य परिचय

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में दकार्गल का अर्थ कुछ इस प्रकार है- "दक" का अर्थ होता है जल और "अर्गल" का अर्थ होता है कुण्डी, अर्थात् जल के शिराओं (नाड़ियों) को जानने के लिए जिसका ज्ञान अपेक्षित है उसे "दकार्गल" कहते है। वास्तु विद्या का ज्ञान करने के पश्चात् अब जिसका ज्ञान होने पर भूमिगत जल का अर्थात् भूमि में जल नियत स्थान से किस दिशा तथा कितने नीचे का ज्ञान प्राप्त होता है, उस धर्म और यश को देने वाले "दकार्गल" को जानते हैं। जिस तरह प्रत्येक मनुष्य के अङ्ग में नाडियाँ होती हैं ठीक उसी प्रकार से भूमि में भी ऊँची-नीची शिरायें (नाड़ियाँ) होती हैं।

आप सभी को ज्ञात होगा कि आकाश से केवल एक स्वाद वाला जल पृथ्वी पर गिरता है, परन्तु वही जल पृथ्वी की विशेषता से तत्तत् स्थानों में अनेक प्रकार के रस और स्वाद वाला हो जाता है। इस तरह भूमि के वर्ण और रस के समान ही जल के भी रस और वर्ण होते हैं अतः भूमि, वर्ण और रस का परीक्षण पूर्वक जल के रस और स्वाद का परीक्षण करना उचित होता है ऐसा मनीषियों ने कहा है। इस विषय पर बृहत्संहिता में वर्णन आता है कि-

धर्म्यं यशस्यं च वदाम्यतोऽहं दकार्गलं येन जलोपतलब्धिः।
पुंसां यथाङ्गेषु शिरास्तथैव क्षितावपि प्रोन्नतनिम्नसंस्थाः॥
एकेन वर्णेन रसेन चाम्भश्च्युतं नभस्तो वसुधाविशेषात्।
नानारसत्वं बहुवर्णतां च गतं परीक्ष्यं क्षितितुल्यमेव॥

आइए अब हम लोग शिराओं (नाड़ीओं) के नाम, भेद और शुभ-अशुभ शिरा इत्यादि जान लेते है वर्णन आता है कि दिशा के स्वामी के नाम से ही कुछ शिराओं को जाना जाता है। जैसे कि पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र, आग्नेय कोण के स्वामी अग्नि, दक्षिण दिशा के स्वामी यम, नैऋत्य कोण के स्वामी राक्षस, पश्चिम दिशा के स्वामी वरुण, वायव्य कोण के स्वामी पवन (वायु), उत्तर दिशा के स्वामी चन्द्र और ऐशान्य कोण के स्वामी शिव है। इन आठ दिक् पतियों के नाम से ऐन्द्री, आग्नेयी और याम्या इत्यादि आठ ही शिराएँ प्रसिद्ध हैं। इन आठ शिराओं के मध्य में एक और नवमी शिरा होती है जिसको महाशिरा नाम से जाना जाता है। इन नव शिराओं के अतिरिक्त अन्य सैकड़ों शिराएँ भी होती है जो कि अपने-अपने नाम से ही प्रसिद्ध होती है। पाताल से ऊपर की तरफ जो शिरा निकलती है वो मनीषियों के द्वारा शुभ मानी गयी है तथा पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर चारों दिशाओं में स्थित शिरायें भी शुभ मानी जाती है। आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य और ऐशान्य चारों कोणों में स्थित शिरायें मनीषियों के द्वारा अशुभ कहा गया है। बृहत्संहिता में वर्णन आता है कि-

पुरुहुतानलयमनिऋतिवरुणपवनेन्दुशङ्करा देवाः।
विज्ञातव्याः क्रमशः प्राच्याद्यानां दिशां पतयः॥

दिक्पतिसंज्ञा च शिरा नवमी मध्ये महाशिरानाम्नी।
एताभ्योऽन्याः शतशो विनिः सृता नामभिः प्रथिताः॥

पातालादूर्ध्वशिरा शुभा चतुर्दिक्षु संस्थिता याश्च।
कोणदिगुत्था न शुभाः शिरानिमित्तान्यतो वक्ष्ये॥

4.4 दकार्गल विचारार्थ अनूप जाङ्गलादि भेद

अब आइए हम लोग देशों के अनूपादि भेदों को जान लेते है। वर्णन आता है कि भारतवर्ष में तीन प्रकार के देशों का विभाजन किया गया है। उन तीनों देशों का नाम ये है- १.अनूप, २.जाङ्गल और ३.मिश्र। अब आइए अनूप देश के बारे में जान लेते हैं।

नदी पल्वलशैलाकद्यः मूदुवाता तपान्वितः।
अनेकवनशस्याढ्यः सोऽनूपो देश उच्यते॥

जिस प्रदेश में नदी, तालाब, पर्वत, वृक्ष, शीतल वायु, बहुत से वन जंगल, हरे-हरे खेत और समुन्द्र के तट निकट हो (जिस जगह पर 25 इंच से अधिक औसत में वर्षा हो), उसको अनूप देश कहते है। अब हम लोग जाङ्गल देश के बारे में जान लेते हैं।

स्वल्पोदक तृणो यस्तु प्रवातः प्रचुरातपः।
सज्ञेयो जाङ्गलो देशो बहुधान्यादि संयुतः॥

जिस प्रदेश में जल तथा घास कि कमी हो, पहाड़ बहुत ऊँचें ना हो, वायु तथा धूप की अधिकता हो, मरुस्थल निकट ही हो, समुन्द्र तट समीप न हो और ज्वार-बाजरा आदि धान्य अधिक पैदा होते हो (जिस जगह पर 10/15 इंच पानी वर्ष में होता हो), उस को जाङ्गल देश कहते है। अब हम लोग मिश्र देश के बारे में जान लेते हैं।

संसृष्ट लक्षणो यस्तु देशः साधारणो मतः।
समासाधारणे यस्माञ्छीत वर्षोष्णमारुतः॥

जिस प्रदेश में अनूप और जाङ्गल दोनों के लक्षण मिलते हो उसको मिश्र देश कहते हैं। (इस मिश्र देश में प्रायः 15 से 25 इंच तक वर्षा बारह महीनों तक में हुआ करती है)। अब आप सभी को ज्ञान हो गया कि जिस देश में अधिक जल प्राप्त होता है उस देश को अनूप संज्ञा से सम्बोधित किया जाता है। जिस देश में कम जल या जल-रहित देश ही उस देश को जाङ्गल संज्ञा से सम्बोधित किया जाता है और जिस देश में ना अधिक जल होता है और ना ही कम जल होता है उस देश को मिश्र संज्ञा से सम्बोधित किया जाता है। आगे आने वाले विषयों में जहाँ कही भी जल रहित देश के प्रमाण का वर्णन आये तो आपको जान लेना चाहिय की जाङ्गल देश की बात की जा रही है। जहाँ सामान्य रूप से शिराओं या जल के प्रमाण का वर्णन मिले वो अनूप और मिश्र संज्ञक देश के लिए है। और यदि अनूप और मिश्र देश के प्रमाण को जाङ्गल देश के लिए कहना हो तो उस पुरुष प्रमाण को द्विगुणित करके कहना चाहिए। इस विषय पर बृहत्संहिता में वर्णन आता है कि-

मरुदेशे यच्चिह्न न जाङ्गले तैर्जलं विनिर्देश्यम्।
जम्बूवेतसपूर्वैर्ये पुरुषास्ते मरौ द्विगुणाः॥

आइए अब हम लोग शिराओं के लक्षणों को जान लेते हैं। यदि जलरहित देश में वेदमजनूँ का वृक्ष हो तो उससे तीन हाथ पश्चिम दिशा में डेढ़ पुरुष नीचे जल होता है ऐसा कहना चाहिए। यहाँ पर पुरुष का प्रमाण भुजा ऊपर की तरफ खड़ी करने से जितनी लम्बाई हो, वह एक पुरुष प्रमाण (१२०अंगुल) ग्रहण करना चाहिए ऐसा मनीषियों का मत है। यहाँ पर पश्चिम शिरा बहती है और यहाँ पर खोदने के समय कुछ चिह्न निकलते हैं, जैसे कि- आधा पुरुष प्रमाण के तुल्य खोदने पर

पाण्डु वर्ण का मेढक, उसके नीचे पीली मिट्टी, उसके नीचे पत्थर और पत्थर के नीचे जल मिलता है। वर्णन आता है कि वल्मीक युक्त निर्गुण्डी(सिन्दुवार वृक्ष) हो तो उससे तीन हाथ दक्षिण दिशा में सवा दो पुरुष नीचे कभी नहीं सूखने वाला जल प्राप्त होता है। इस स्थान पर खोदने पर कुछ इस प्रकार के चिह्न प्राप्त होते हैं- आधा पुरुष नीचे लाल मछली, उसके नीचे पीली मिट्टी, उसके नीचे सफेद मिट्टी, उसके नीचे पत्थर के छोटे-छोटे कणों से समन्वित और उसके नीचे जल की प्राप्ति होती है। अर्जुन के वृक्ष से तीन हाथ उत्तर दिशा में बाँबी हो तो बाँबी से तीन हाथ पश्चिम दिशा में साढ़े तीन हाथ नीचे जल की प्राप्ति होगी ऐसा वर्णन प्राप्त होता है। यहाँ खोदने पर भी कुछ इस प्रकार के चिह्न मिलते हैं- आधा पुरुष नीचे गोधा (गोह), एक पुरुष नीचे काली तथा सफेद मिट्टी, उसके नीचे पीली मिट्टी, उसके नीचे सफेद रेत और उससे नीचे जल प्राप्त होगा।

जामुन के वृक्ष के पूर्व दिशा की तरफ समीप में ही बाँबी हो तो उससे अर्थात् बाँबी से तीन हाथ दक्षिण दिशा में दो पुरुष के तुल्य प्रमाण के नीचे मधुर जल प्राप्त होता है। उस स्थान पर खोदने पर कुछ चिह्न भी प्राप्त होता है- आधा पुरुष प्रमाण नीचे खोदने पर मछली और उससे नीचे खोदने पर कबूतर के रंग के समान वाला पत्थर प्राप्त होता है तथा इस खात में नील वर्ण की मिट्टी होती है और चिर काल तक अधिक जल प्राप्त होता है। यदि जामुन का पेड़ जल रहित देश में हो तो उसी से अर्थात् जामुन के वृक्ष से तीन हाथ उत्तर दिशा में दो पुरुष तुल्य प्रमाण नीचे पूर्व शिरा (नाड़ी) होती है। यहाँ खोदने पर भी कुछ चिह्न प्राप्त होते हैं जैसे- एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे लोहे के समान गन्ध वाली मिट्टी, उसके नीचे कुछ सफेद मिट्टी और उसके नीचे मेंढक निकलता है तथा उसके नीचे मधुर जल प्राप्त होता है। यदि आपको वेर के वृक्ष से पूर्व दिशा में वल्मीक दिखे तो उससे अर्थात् वल्मीक से तीन हाथ पश्चिम दिशा में तीन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होगा। यहाँ खोदने पर आधा पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में सफेद छिपकली प्राप्त होगी। जल रहित देश में गूलर का वृक्ष हो तो उससे तीन हाथ पश्चिम दिशा में ढाई पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में सुन्दर जल वाली शिरा (नाड़ी) होती है। इस भूमि का खोदने के समय कुछ चिह्न प्राप्त होते हैं जैसे- आधा पुरुष प्रमाण तुल्य खोदने पर सफेद सर्प, उसके नीचे काला पत्थर और उसके नीचे सुन्दर जल वाली शिरा (नाड़ी) प्राप्त होती है ऐसा वर्णन मिलता है। जिस भूमि पर सफेद काँटों से युक्त शमी वृक्ष हो तो वहाँ उस वृक्ष से दक्षिण दिशा में पचहत्तर (75) पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है। उस भूमि पर खुदाई करने पर कुछ चिह्न प्राप्त होते हैं जैसे- आधा पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में सर्प निकलता है और उसके नीचे सुन्दर जल की प्राप्ति होती है। जहाँ पर अनेक गाँठों से युक्त शमी वृक्ष हो और उसके उत्तर दिशा में वल्मीक हो तो उस शमी वृक्ष के पश्चिम दिशा में पाँच हाथ पर पचास (50) पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे जल की प्राप्ति होती है ऐसा वर्णन मिलता है। यदि वल्मीक के ऊपर दूब या सफेद कुशा हो तो वल्मीक के नीचे कूप खोदने से इक्कीस (21) पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल मिलता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है।

धतूर वृक्ष के उत्तर दिशा में वल्मीक हो तो उस वृक्ष से दो हाथ दक्षिण दिशा में पन्द्रह (15) पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल मिलता है। इस खात में खारा जल होता है। इस भूमि में खुदाई करने पर कुछ इस प्रकार के चिह्न प्राप्त होते हैं जैसे- आधा पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में नेवला, ताम्र वर्ण का पत्थर और लाल रंग की मिट्टी प्राप्त होती है। यहाँ दक्षिण शिरा बहती है। यदि अर्जुन वृक्ष के पूर्व दिशा में वल्मीक दिखाई दे तो उस वृक्ष से अर्थात् अर्जुन वृक्ष से एक हाथ पर पश्चिम दिशा में चौदह (14) पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में शिरा निकलती है और एक

पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में पीले रंग का गोह दिखाई देता है। यदि पीलू वृक्ष के ईशान कोण में वल्मीक हो तो उस वृक्ष से साढ़े चार हाथ पश्चिम दिशा में पाँच पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में उत्तर बहने वाली शिरा प्राप्त होती है। यहाँ खोदने के समय पर एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे मेढ़क, उसके नीचे पीली तथा हरी मिट्टी, उसके नीचे पत्थर तथा उसके नीचे जल प्राप्त होता है ऐसा वर्णन मिलता है। पिलु वृक्ष की पूर्व दिशा में वल्मीक हो तो सब जगह से साढ़े चार हाथ दक्षिण दिशा में सात पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल कहना उचित होता है। यहाँ भी खोदने पर एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में एक हाथ लम्बा चितकबरा सर्प और उसके नीचे बहुत खारा जल भरने वाली दक्षिण शिरा निकलती है ऐसा मनिषियों द्वारा कहा गया है।

जिस स्थान से भाप या धुँआ निकलता हुआ दिखाई दे वहाँ से दो पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में बहुत जल बहने वाली शिरा कहनी चाहिए। जिस खेत में धान्य उत्पन्न होकर नष्ट हो जाए, बहुत निर्मल धान्य हो या उत्पन्न होकर पीला पड़ जाए वहाँ दो पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में बहुत जल बहने वाली शिरा प्राप्त होती है ऐसा वर्णन मिलता है। जिससे जल रहित देश में दो सिर वाले खजूर का पेड़ दिखाई दे वहाँ खजूर वृक्ष से दो हाथ पश्चिम दिशा में तीन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा जाता है। जहाँ काँटे वाले वृक्ष में एक बिना काँटे वाला अथवा बिना काँटे वाले वृक्ष में एक काँटे वाला वृक्ष दिखाई दे तो वहाँ उस वृक्ष से तीन हाथ पश्चिम दिशा में एक तिहाई युक्त तीन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल यह धन प्राप्त होता है ऐसा वर्णन आता है। जहाँ पर निर्मल वल्मीक से युक्त तिलक, आम्रातक (अम्बाड़ा), वरुणक (बरण), भिलावा, बेल, तेन्दू (तेन्दुआ), अङ्कोल, पिण्डार, शिरीष, अञ्जन, परुषक (फालसा), अशोक, अतिवला यह वृक्ष हो वहाँ से इन वृक्षों से तीन हाथ आगे उत्तर दिशा में साढ़े चार पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है ऐसा मनिषियों द्वारा कहा जाता है। जिस जल रहित देश में बहुत जल वाले देश के चिह्न दिखाई दे वहाँ पर विरण (गाँडर) और दूब अधिक कोमल हो, वहाँ एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल होता है तथा जहाँ पर भड्गरैया, निसोत, इन्द्रदन्ती (दन्तिया, जयपाल), सुकरपादी, लक्ष्मणा यह औषधियाँ हो वहाँ से दो हाथ आगे दक्षिण दिशा में तीन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल होता है ऐसा कहना चाहिए। अश्मन्तक वृक्ष से बाएं तरफ बेर का वृक्ष या वल्मीक हो तो उस वृक्ष से छः हाथ आगे उत्तर दिशा में साढ़े तीन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है। वहाँ पर एक पुरुष नीचे कछुआ, उसके नीचे धूसर वर्ण का पत्थर, उसके नीचे रेत वाली मिट्टी, उसके नीचे दक्षिण शिरा और उसके नीचे ईशान कोण की शिरा निकलती है ऐसा वर्णन प्राप्त होता है। कदम्ब वृक्ष से पश्चिम में वल्मीक हो तो उस वृक्ष से तीन हाथ दक्षिण दिशा में पौने छः पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है। वहाँ लोहे के गन्ध से युक्त अधिक जल वाले उत्तरवाहिनी शिरा निकलती है। एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में सुवर्ण के रंग का मेढ़क, उसके नीचे पीली मिट्टी प्राप्त होती है।

यदि वल्मीक से युक्त सप्तवर्ण वृक्ष दिखे तो उससे अर्थात् वृक्ष से एक हाथ उत्तर पाँच पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल कहना चाहिए। इस भूमि पर खोदने पर भी कुछ चिह्न प्राप्त होते है जैसे- आधा पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में हरे रंग का मेढ़क, उसके नीचे हरताल के समान पीली रंग की भूमि, उसके नीचे मेघ के समान रंग का काला पत्थर और उसके नीचे मधुर जल से युक्त उत्तर वाहिनी शिरा प्राप्त होता है ऐसा वर्णन ग्रन्थों में मिलता है। यदि विभीतक (बहेड़ा) वृक्ष के समीप दक्षिण दिशा में वल्मीक दिखाई दे तो उस वृक्ष से दो हाथ पूर्व तथा डेढ़ पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे शिरा होती है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है। यदि काकोदुम्बरिका वृक्ष के

समीप वल्मीक दिखे तो उस वल्मीक के सवा तीन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे पश्चिम दिशा में बहने वाली शिरा निकलती है। इस भूमि पर खोदने के समय सफ़ेद और पीली रंग कि मिट्टी प्राप्त होती है। उसके नीचे सफेद रंग का पत्थर और आधा पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में सफेद रंग चूहा दिखाई देता है उसके नीचे मधुर जल प्राप्त है। यदि जल रहित देश में पलाश (ढाक) के वृक्ष से युक्त वेर का वृक्ष दिखाई दे तो उस वृक्ष से तीन पश्चिम दिशा में सवा तीन हाथ पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है। यहाँ इस भूमि पर खोदते समय कुछ चिह्न प्राप्त होता है जैसे- एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में विष रहित सर्प तथा उससे नीचे मधुर जल प्राप्त होता है ऐसा वर्णन ग्रन्थों में प्राप्त होता है। जल रहित देश में शोणाक (सरिवन) वृक्ष दिखाई दे तो उस वृक्ष से दो हाथ वायव्य कोण में तीन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में कुमुदा नामक शिरा प्राप्त होती है। जिस किसी भी वृक्ष के मूल में मेढ़क दिखाई दे तो उस वृक्ष से एक हाथ उत्तर दिशा में साढ़े चार पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल होता है। यहाँ इस भूमि पर खोदते समय कुछ चिह्न प्राप्त होता है जैसे- एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में नेवला, उसके नीचे क्रम से नीली, पीली तथा सफेद मिट्टी, उसके नीचे मेढ़क के सदृश पत्थर और उसके नीचे मधुर जल प्राप्त होता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है। तिलक (तालमखाना) के वृक्ष से दक्षिण दिशा में कुशा और दूब से युक्त स्निग्ध वल्मीक हो तो उस वृक्ष से पाँच हाथ पश्चिम दिशा में पाँच पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है और यहाँ पर पूर्व वाहिनी शिरा भी प्राप्त होती है।

यदि कपित्थ (कैथ) के वृक्ष से दक्षिण वल्मीक हो तो उस वृक्ष से सात हाथ उत्तर दिशा में पाँच पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल कि प्राप्ति होती है। यहाँ इस भूमि में खोदने पर कुछ चिह्न वक्ष्यमाण होते है जैसे- एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में चितकबरा सर्प और काली मिट्टी प्राप्त होती है। उसके नीचे परतदार पत्थर, उसके नीचे सफेद मिट्टी तथा एक पश्चिम वाहिनी शिरा और उस पश्चिम वाहिनी शिरा के नीचे उत्तर वाहिनी शिरा प्राप्त होती है ऐसा संहिता ग्रन्थों में वर्णन प्राप्त होता है। तृण रहित प्रदेश में कोई एक स्थान तृण युक्त दिखाई दे तो अथवा तृण युक्त प्रदेश में कोई एक स्थान तृण रहित दिखाई दे तो उस स्थान से साढ़े चार पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में शिरा या धन प्राप्त होता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है। जल रहित देश में कम्पिल्ल वृक्ष (कपिल) दिखाई दे तो उससे तीन हाथ पूर्व दिशा में सवा तीन पुरुष प्रमाण तुल्य दक्षिण शिरा बहती है। यहाँ इस भूमि पर खोदने के समय पहले नील कमल के समान रंग वाली मिट्टी और उसके नीचे कबूतर के रंग कि मिट्टी दिखाई देती है तथा एक हाथ नीचे बकरे के समान गन्ध वाली मछली और उसके नीचे खारा जल निकलता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है। आपको यदि बहेड़े के वृक्ष से पश्चिम दिशा में वल्मीक दिखाई दे तो उस बहेड़े वृक्ष से उत्तर दिशा में साढ़े चार पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में शिरा होती है। यहाँ इस भूमि पर खोदते समय एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में श्वेत रंग का विश्वम्भरक (प्राणी विशेष) दिखाई देता है। फिर उसके नीचे केसर के रंग का पत्थर दिखाई देता है और उसके नीचे पश्चिम दिशा को बहने वाली शिरा निकलती है परन्तु यह शिरा तीन वर्ष बाद नष्ट हो जाती है अर्थात् जल नष्ट हो जाता है।

जिस जगह कोविदारक (सप्तपर्ण) वृक्ष के ईशान कोण में कुशायुक्त श्वेत वल्मीक दिखाई दे तो वहाँ पर सप्तपर्ण वृक्ष और वल्मीक के मध्य में साढ़े पाँच पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में अधिक जल प्राप्त होता है। यहाँ पर खोदने पर कुछ चिह्न वक्ष्यमाण होते हैं जैसे- एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे खोदने पर कमल पुष्प के मध्य के समान रंग का सर्प, उसके नीचे लाल वर्ण की भूमि और उसके नीचे कुरुविन्द नामक पत्थर निकलता है और उसके नीचे मधुर जल प्राप्त होता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है। यदि आपको करञ्जक वृक्ष के दक्षिण दिशा में वल्मीक दिखाई दे

तो उस वृक्ष से दो हाथ दक्षिण दिशा में तीन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में शिरा होती है। यहाँ इस भूमि पर खोदते समय कुछ चिह्न दिखाई देते हैं जैसे- आधा पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे खोदने पर कछुआ, उसके नीचे खोदने पर पुर्व वाहिनी शिरा, उसके नीचे उत्तर वाहिनी शिरा, उसके नीचे हरे रंग का पत्थर और उसके नीचे जल निकलता है। महुए के वृक्ष से उत्तर दिशा में वल्मीक हो तो उस वृक्ष से पाँच हाथ आगे पश्चिम दिशा में साढे आठ पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल होता है। यहाँ भी खोदते समय कुछ चिह्न प्राप्त होते हैं जैसे- एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में प्रधान सर्प, उसके नीचे धूम्र वर्ण की पृथ्वी, उसके नीचे कुल्थी रंग का पत्थर और उसके नीचे सदा फेन युक्त जल देने वाली पुर्व वाहिनी शिरा निकलती है। ऐसा वर्णन हमारे संहिता ग्रन्थों में प्राप्त होता है। यदि वल्मीक से युक्त ताड़ (ताल) या नारियल का वृक्ष दिखाई दे तो उस वृक्ष से छः हाथ पश्चिम दिशा में चार पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में दक्षिण वाहिनी शिरा दिखाई देती है ऐसा वर्णन प्राप्त होता है। अगर आपको हरिद्र (हरदुआ) वृक्ष की बाई तरफ वल्मीक दिखाई दे तो उस वृक्ष के तीन हाथ पूरब दिशा में एक तिहाई युक्त पाँच पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होगा। यहाँ पर भी खोदते समय कुछ चिह्न प्राप्त होंगे जैसे- एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में नील वर्ण का सर्प, उसके नीचे पीली मिट्टी, उसके नीचे हरे रंग का पत्थर, उसके नीचे काली भूमि एवम् उसके नीचे पश्चिम शिरा और दक्षिण शिरा निकलती है। ऐसा वर्णन प्राप्त होता है। जिस जगह पर निर्मल लम्बी डालियों से युक्त छोटे-छोटे विस्तृत वृक्ष हो वहाँ पर जल निकट में होता है ऐसा जाना चाहिए और जहाँ अन्तःसार वाले, विवर्ण पत्ते वाले, रूखे वृक्ष हो वहाँ पर जल का अभाव होता है ऐसा वर्णन प्राप्त होता है। जिस जगह पर पाँव से ताड़न करने पर गम्भीर शब्द निकले वहाँ पर अर्थात् उस जगह पर तीन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल और उत्तर वाहिनी शिरा होती है ऐसा वर्णन प्राप्त होता है। और किसी वृक्ष की एक शाखा नीचे की ओर चुकी हो या पीली पड़ गई हो तो उस शाखा के तीन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में खोदने पर जल मिलता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है।

यदि किसी वृक्ष के फल फूलों में विकार या रोग उत्पन्न हो उस वृक्ष से तीन हाथ पर पूर्व दिशा में चार पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में शिरा होती है। इस भूमि पर खोदते समय पत्थर और पीली रंग की मिट्टी प्राप्त होती है। और काण्टों से रहित एवं सफेद पुष्पों से युक्त कटेरी का वृक्ष दिखाई दे तो उस वृक्ष के नीचे भूमि में साढ़े तीन पुरुष प्रमाण तुल्य खोदने पर जल की प्राप्ति होती है ऐसा वर्णन मिलता है। यदि सफेद पुष्प वाला कर्णिकार (कठचम्पा) या ढाक का वृक्ष हो तो उस वृक्ष से दो हाथ दक्षिण दिशा में दो पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है। करीर (करील) वृक्ष के उत्तर दिशा में वल्मीक हो तो उस वृक्ष से साढ़े चार हाथ पर दक्षिण दिशा में दस पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में मधुर जल प्राप्त होता है। यहाँ इस भूमि पर खोदते समय चिह्न रूप में एक पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे पीला मेंढक दिखाई देता है। यदि रोहीतक (लाल करञ्ज) वृक्ष के पश्चिम में वल्मीक हो तो उस वृक्ष से तीन हाथ आगे दक्षिण दिशा में बारह पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में खारे जल वाली पश्चिम वाहिनी शिरा प्राप्त होती है। वल्मीक के बिना भी बेर एवं लाल करञ्च यह दोनों वृक्ष इकट्ठे दिखाई दे तो उन वृक्षों से तीन हाथ आगे पश्चिम दिशा में सोलह पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है। यहाँ मधुर जल होता है ऐसा वर्णन मिलता है। पहले दक्षिण शिरा और बाद में उत्तर शिरा बहती है आटे के समान सफेद पत्थर तथा सफेद मिट्टी चिह्न रूप में प्राप्त होती है और आधा पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में बिच्छू भी दिखाई देता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है। करीर वृक्ष के साथ बेर का वृक्ष दिखाई दे तो उन वृक्षों से तीन हाथ के पश्चिम दिशा में अट्ठारह पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में

ईशान कोण में बहने वाली और बहुत जल वाली शिरा प्राप्त होती है। यदि आपको पीलू वृक्ष से युक्त बेर का वृक्ष दिखाई दे तो उनसे अर्थात् उन दोनों वृक्षों से तीन हाथ आगे पूर्व दिशा में बीस पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में कभी ना सूखने वाला खारा जल प्राप्त होगा। जिस जगह अर्जुन और करीर या अर्जुन या बेल के वृक्ष का संयोग हो तो उन वृक्षों से दो हाथ पर पश्चिम दिशा में पच्चीस पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल होता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है। जिस भूमि में कदम्ब और वल्मीक के ऊपर दूब दिखाई दे वहाँ कदम्ब वृक्ष से दक्षिण दिशा में दो हाथ पर पच्चीस पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है। तीन वल्मीक के मध्य में विजातीय तीन तरह के वृक्षों से युक्त लाल करञ्ज का वृक्ष हो तो उस लाल करञ्ज के वृक्ष से उत्तर दिशा में चार हाथ एवं सोलह अङ्गुल पर पच्चीस पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में खोदने पर पत्थर और उसके नीचे शिरा प्राप्त होती है ऐसा वर्णन मिलता है। यदि एक स्थान पर पाँच वल्मीक हो और उनके बीच में एक वल्मीक सफेद हो तो उस सफेद वल्मीक में खोदने पर पचपन पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में शिरा प्राप्त होगी। जिस जगह पर पलाश (ढाक) के वृक्ष से युक्त शमी वृक्ष हो वहाँ पर उन वृक्षों से पश्चिम दिशा में पाँच हाथ पर साठ (60) पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है। यहाँ पर चिह्न रूप में आधा पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे सर्प और उसके नीचे रेत में मिली हुई पीली मिट्टी प्राप्त होती है ऐसा वर्णन मिलता है। जिस जगह पर वल्मीक से घिरा हुआ सफेद रोहीतक का वृक्ष दिखाई दे तो वहाँ पर अर्थात् उस वृक्ष से पूर्व दिशा में एक हाथ पर सत्तर (70) पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल प्राप्त होता है।

4.5 जलशोधन विधि

अब आइए हम लोग कूप के बारे में जान लेते हैं। सर्वप्रथम यह जान लेते हैं कि कूप गाँव या नगर के किस दिशा में होना चाहिए और कौन-कौन से दिशा में क्या-क्या फल होता है। गाँव या नगर के आग्नेय कोण पर कूप हो तो उस गाँव या नगर में नित्य अनेक प्रकार का भय उत्पन्न होता रहता है। अधिकतर गाँव में आग लगती है और मनुष्य भी जलकर मरते हैं । और यदि नैऋत्य कोण में कूप हो तो बालकों का क्षय एवं वायव्य कोण में हो तो स्त्रियों को भय होता है। शेष दिशाओं में कूप का होना शुभ माना जाता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है। बृहत्संहिता का वर्णन आता है कि-

आग्नेये यदि कोणे ग्रामस्य पुरस्य वा भवेत् कूपः।
नित्यं स करोति भयं दाहं च समानुषं प्रायः॥
नैर्ऋतकोणे बालक्षयं च वनिताभयं च वायव्ये।
दिक्त्रयमेतत्त्यक्त्वा शेषासु शुभावहाः कूपाः॥

अब हम लोग वापी के लक्षणों के बारे में जान लेते हैं वर्णन आता है कि वापी में कूप आदि के अपेक्षा में अधिक समय तक जल ठहरता है। दक्षिण दिशा और उत्तर दिशा आयत वाले वापी में जल नहीं ठहरता है क्योंकि वायु के तरंगों से वह वापी नष्ट हो जाती है। और यदि दक्षिण एवम् उत्तर आयत वाली वापी बनाना चाहे तो तरंगों से बचाने के लिए उसके किनारों को मजबूत लकड़ी या पत्थर आदि से अच्छी तरह से चुनवा दें तथा बनाने के समय मिट्टी की हर एक तह पर हाथी, घोड़े आदि को दौड़ाकर बैठा लेना चाहिए जिससे वह मिट्टी दबकर विशेष प्रकार से मजबूत हो जाए। बृहत्संहिता में वर्णन आता है कि-

पाली प्रागपरायताम्बु सुचिरं धत्ते न याम्योत्तरा
कल्लोलैरवदारमेति मरुता सा प्रायशः प्रेरितैः।
तां चेदिच्छति सारदारुभिरपां सम्पातमावारयेत्
पाषाणादिभिरेव वा प्रतिचयं क्षुण्णं द्विषाश्चादिभिः॥

अब आइए कूप को कौन-कौन से नक्षत्रों में आरम्भ करना चाहिए, जान लेते हैं। वर्णन आता है कि हस्त, मघा, अनुराधा, पुष्य, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और शतभिषा इन नक्षत्रों में कूप आरम्भ करना मनीषियों द्वारा शुभ माना गया है। और वरुण को बलि देकर गन्ध, पुष्प और धूप आदि से बड़िया वेतस की लकड़ी की कील की पूजन करके शिरास्थान में उसको स्थापित करना चाहिए।

आइए अब वापी के तट पर लगने वाले वृक्षों को जान लेते हैं। वर्णन आता है कि निचुल, जामुन, वेंत, नीप (एक तरह का कदम्ब) इन वृक्षों के साथ अर्जुन, बड़, आम, पिलखन, कदम्ब और बकुल के साथ कुरवक, ताड़, अशोक, महुआ, मौलसिरी इन वृक्षों को वापी के तट पर लगाना चाहिए। वापी की एक तरफ जल निकलने के लिए पत्थरों से बन्धवाया हुआ एक मार्ग बनाना चाहिए। उस मार्ग को छिद्ररहित लकड़ी के तख्ते से ढककर मिट्टी से दृढ़ कर देना चाहिए।

अगर जब कभी जल गन्दला, कड़ुआ, खारा, बेस्वाद या दुर्गन्ध वाला हो जाए तो उसमें अञ्जन, मोथा, खस, राजकोशातक, आँवला और कतक का फल, इन सब का चूर्ण डालने से वह जल पुनः निर्मल, मधुर, सुन्दर गन्ध वाला और अनेक गुणों से युक्त हो जाता है ऐसा वर्णन ग्रन्थों प्राप्त होता है।

4.6 शिला विदारण विधि

जब कभी कूप आदि खोदने के समय पत्थर निकल जाएँ और वह आसानी से न फूट सकें तो उसके ऊपर ढाक और तेन्दु की लकड़ी जलाकर आग के समान लाल बनाकर उसके ऊपर चूने की कली से मिश्रित जल का छिड़काव करने से वह शिला टूट जाती है ऐसा वर्णन प्राप्त होता है।

भेदं यदा नैति शिला तदानीं पलाशकाष्ठै; सह तिन्दुकानाम्।
प्रज्वालयित्वानलमग्निवर्णा सुधाम्बुसिक्ता प्रविदारमेति॥

और भी अन्य प्रकार से शिला विदारण की विधि बताई गई है जैसे कि मोक्षक (काली पाढरि) वृक्ष की लकड़ी का भस्म मिलाकर जल को गर्म करें और फिर उसमें शर के वृक्ष का भस्म मिलावें, बाद में अग्नि से तपाई हुई शिला पर उसे सात बार छिड़कने से शिला फूट जाती है। एक विधि यह भी बताई गई है कि छाछ, काँजी, मद्य, कुलथी इन सब को मिलाकर एक बर्तन में सात रात तक छोड़ दे बाद में अग्नि से तपाई हुई उस शिला पर उसे बार-बार छिड़कने से शिला फूट जाती है। नीम के पत्ते, नीम की छाल, तिलों का नाल, अपामार्ग, तेन्दु का फल, गिलोय इन सबों के भस्म को गोमूत्र में मिलाकर उसे तपाई हुए शिला पर छह बार छिड़कने से शिला फूट जाती है ऐसा मनिषियों द्वारा कहा गया है।

जब कभी इन विधियों से भी शिला विदारण ना हो पाए तब शस्त्रों के द्वारा उन शिलाओं का विदारण किया जाता है। अब इन शिलाओं के विदारण में उपयोग में आने वाले शस्त्रों को कैसे सुरक्षित रखे तथा उनका धार कैसे मजबूत बना रहे। इस विषय पर वर्णन आता है कि-

आर्कं पयो हुडुविषाणमषीसमेतं
पारावताखुशकृता च युतः प्रलेपः।
टङ्कस्य तैलमथितस्य ततोऽस्य पानं
पश्चाच्छितस्य न शिलासु भवेद्विघातः॥

शस्त्र पर पहले तिल का तेल मले, फिर मेष के सींग का भस्म तथा कबूतर और चूहे की बीट से युक्त आक के वृक्ष के दूध का लेप करें, फिर उसको आग में तपा कर पूर्वोक्त पान देवे। ऐसा करने के पश्चात् तेज करके पत्थर पर प्रहार करने से भी उसकी धार नहीं टूटती है। एक विधि और बताई गई है कि एक अहोरात्र तक तक्र से युक्त कदली वृक्ष की भस्म में स्थापित लोहे में पूर्वोक्त पान देकर तीक्ष्ण करके पत्थर का प्रहार करने से भी उस शस्त्र की धार नहीं टूटती है तथा अन्य लोहे पर भी प्रहार करने से वह शस्त्र कुण्ठता (अतीक्ष्णता) को नहीं प्राप्त होता है ऐसा मनीषियों द्वारा कहा गया है।

4.7 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया की दकार्गल का अर्थ है जल के शिरा को जानना। इस विषय पर बृहत्संहिता में वर्णन प्राप्त होता है कि पुर्वादि दिशाओं के आधार पर आठ शिराओं के नाम तथा नवमी शिरा जिसका नाम महाशिरा है। एवं इसके बाद अनूपादि देशों में प्राप्त होने वाले वृक्षों के कितने पुरुष प्रमाण तुल्य नीचे भूमि में जल की कौन सी शिरा प्राप्त होगी इसका भी ज्ञान हो गया है। तत्पश्चात् वापी के किनारे लगाने वाले वृक्षों को जान लिया गया है और कूप और वापी के जल को कैसे सुरक्षित रखा जाये इसका भी ज्ञान हो गया है। उसके बाद वापी, कूप आदि को खोदते समय प्राप्त होने वाले पत्थरों को कैसे नष्ट किया जाये इसके विषय में भी पता चल गया है। और यदि वो प्राप्त हुए पत्थर वर्णित विधियों से ना नष्ट हो पाए तो उनको तोड़ने के लिए प्रयोग में आने वाले शस्त्रों के बारे में भी जान गए है।

4.8 अभ्यास प्रश्न

1. अनूप देश किसे कहते है?
   (क). कम पानी वाले देश (ख). ज्यादा पानी वाले देश
   (ग). दोनों प्रकार के देश (घ). इनमे में कोई नही
2. एक पुरुष का प्रमाण कितने अंगुल में बताया गया है?
   (क). 130 (ख). 140 (ग). 120 (घ). 150
3. कूप आरम्भ किस नक्षत्र में करना चाहिए?
   (क). अश्विनी (ख). रेवती (ग). मृगशिरा (घ). मघा
4. कपित्थ (कैथ) वृक्ष से किस दिशा में जल की प्राप्ति होती है?
   (क). उत्तर (ख). दक्षिण (ग). पूर्व (घ). पश्चिम

4.9 शब्दावली

शिरा = नाड़ी
गोधा = गोह

करीर	=	करील
कर्णिकार	=	कठचम्पा
ताड़	=	ताल
शोणाक	=	सरिवन

4.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. घ
4. क

4.11 ग्रन्थसूची

1. बृहत्संहिता
2. बृहद्वास्तुमाला
3. बृहद्दैवज्ञरञ्जनम्
4. वास्तुरत्नावली

4.12 निबन्धात्मक प्रश्न

1. दकार्गल किसे कहते है ? स्पष्ट कीजिये।
2. अनूपादि देशों के अन्तर को स्पष्ट कीजिये।
3. वापी और कूप के लक्षणों को बताये तथा उनको सुरक्षित रखने के लिए क्या-क्या उपाय करना चाहिए?
4. शिला विदारण की विधियों को बताये तथा शस्त्र के धार को सही से कैसे रखे?